موضوع الخطبة :الخصائص العشرون لشهر رمضان

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي

शीर्षक:

रमज़ान के महीने की २० विशेषताएँ!

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसा ओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे नकारात्मक चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है.

ए मुसलमानो! मैं आपको एवं स्वयं अपने को अल्लाह के भय की आज्ञा देता हूं यही वह आज्ञा है जो पूर्व एवं पश्चात के संपूर्ण मनुष्यों को दी गई. अल्लाह का कथन है:

وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ. (النساء:131)

अर्थात: " नि: संदेह हमने उन मनुष्यों को जो तुमसे भूतपूर्व पुस्तक दिए गए एवं तुमको भी यही आज्ञा दी है कि अल्लाह से डरते रहो."

● इस कारणवश अल्लाह तआला से भेय करें एवं उससे डरते रहें उसकी आज्ञाकारीता करें एवं अवज्ञा से बचें. ज्ञात रखें कि अल्लाह तआला जो चाहता है अपनी इच्छा से अविष्कार करता है जैसा उस उच्च एवं सर्वश्रेष्ठ की बुद्धिमत्ता को आवश्यकता होती है. इसी कारणवश उसने कुछ देवदूतों को कुछ देवदूतों पर वरियता दी, कुछ पुस्तकों को कुछ पुस्तकों पर अग्रमानता दी, कुछ दूतों को कुछ दूतों पर प्रधानता दी, कुछ स्थानों को दूसरे स्थानों एवं समय पर वरीयता दी, इसी प्रकार रमज़ान के महीने को भी अन्य महीनों पर अग्रमान्यता दी. यह दासों के हित में अल्लाह की कृपा है कि उसने उनके लिए पुण्य एवं लाभ के अवसर प्रदान किए जिनमें सत्यकर्मों के लाभ कई गुना बढ़ा दिए जाते हैं, पापों को मिटा दिया जाता है एवं स्वर्ग में स्थान उच्च किए जाते हैं.

ए अल्लाह के दासो! पिछले उद्देश्य यह बताया गया था कि अल्लाह ताला ने व्रु को १० महान बुद्धिमत्ता के आधार पर घोषित किया है.

(यह द्वार अल-इस्लाम सवाल-जवाब वेबसाइट: http://islamqa.info/ar/26862, **एवं शैख़ मोहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह खेल एक मजालिसु-शहरी-रमज़ान नामक पुस्तक के नौवें अध्याय से संक्षेप एवं रद्द-व-बदल के साथ स्थानांतरित है.)**

बल्कि व्रत की बुद्धिमत्ता तो इससे भी अधिक है उनमें सबसे महान बुद्धिमत्ता वह है जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने अपने इस कथन में किया है:

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ **لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ**.
(البقرة:183)

अर्थात: " ए विश्वासयो! तुम पर व्रत रखना अनिवार्य किया गया जिस जिस प्रकार तुमसे भूतपूर्व मनुष्यों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम भय को अपनाओ."

जब यह सिद्ध हो गया तब यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा की बरखा बरसाए- कि रमज़ान के व्रत की २० विशेषताएं हैं जो निम्नलिखित हैं:

● व्रत इस्लाम का चौथा स्तंभ है, अब्दुल्लाह बिना उमर रज़ि अल्लाहू अन्हूमा का वर्णन है: मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना: इस्लाम ५ स्तंभों पर आधारित है, यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं, एवं नमाज़ पढ़ना, दान-पुण्य देना, हज्ज करना एवं रमज़ान के व्रत रखना.

(इसे बज़ार: ०८ एवं मुस्लिम:१६ ने प्रतिलिपि की एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि यह इस्लाम से पूर्व धर्मों में भी प्रचलित था जो इसके सरफेस होने का प्रमाण है अल्लाह का कथन है:

يَـٰٓـــأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّـيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ.
(البقرة:183)

अर्थात: " ए विश्वासयो! तुम पर व्रत रखना अनिवार्य किया गया जिस प्रकार तुमसे भूतपूर्व मनुष्यों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम भय को अपनाओ."

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह ने इसका संबंध अपनी ओर किया है जो कि संपूर्ण उपासनाओं में इसकी अलग पहचान एवं सर्वश्रेष्ठ होने को प्रमाणित करता है. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का कथन है: "आदम की संतान का व्रत के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य उसका है यह मेरा है एवं मैं स्वयं उसका बदला दूंगा..."

अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला का संपूर्ण इबादतों के अतिरिक्त व्रत को विशेष रूप से अपनी और संबंधित करना इस बात पर साक्ष्य है कि अल्लाह तआला के निकट यह माननीय एवं प्रिय उपासना है. इसका कारण यह है कि इस इबादत के भीतर अल्लाह के हित में

दांसों का भाव खुले रूप में शुद्ध हुआ करता है क्योंकि व्रत दांसों एवं पालनहार के बीच एक गुप्त वस्तु है जिससे अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी अवगत नहीं हो सकता. व्रत रखने वाला एकांत में उन वस्तुओं के प्रयोग करने की क्षमता रखता है जिन्हें अल्लाह तआला ने अवैध कर दिया है, परंतु वह उसका प्रयोग नहीं करता है क्योंकि उसे ज्ञात है कि उसका एक रब है जो अकेले में भी उसे देख रहा है और उसने उन वस्तुओं को उस पर अवैध कर दिया है, इसलिए वह अल्लाह की यातना से भय करते हुए उन वस्तुओं को त्याग देता है. यही वह मूल कारण है कि अल्लाह ने अपने दासों के इस शुद्धता की प्रशंसा की है और संपूर्ण उपासनाओं को छोड़कर व्रत को विशेष रूप से अपने लिए चुन लिया है.

● रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह ताला ने इसके संबंध में कहा है: "मैं स्वयं इसका परीणाम दूंगा." इस कारणवश अपनी ओर बदले को संबंधित किया है क्योंकि पूण्य-कार्यों बदला गणना के साथ बढ़ा-चढ़ा कर प्रदान किया जाता है. प्रत्येक पुण्य का लाभ १० गुना से लेकर ७०० गुना एवं उससे अधिक दिया जाता है. परंतु व्रत के सवाब को अल्लाह तआला ने बिना किसी गणना के अपनी और संबंधित किया है जो इस बात का साक्ष्य है कि इसका सवाब अधिक बड़ा है. वह स्वच्छ एवं विशाल अल्लाह संपूर्ण दयालु से बड़ा दयालु एवं सारे कृपालु ओं से बड़ा कृपालु है. दया दयालु के

स्तर के अनुसार मिलती है इस कारण वश व्रत रखने वाले का सवाब अताह एवं अनगिनत है.

● व्रत की एक विशेषता यह है इसमें धीरज के तीनों भाग इकट्ठा हो जाते हैं: अल्लाह की आज्ञाकारीता पर धीरज, अल्लाह ने जिन चीज़ों को अवैध कर दिया है उनसे दूरी बनाए रखने पर धीरज, एवं अल्लाह ने हमारे भाग्य में जो कठिन परिस्थितियां लिख दिए हैं उन पर धीरज. जैसे भूख प्यास गंभीरता तन एवं प्राण की दुर्बलता इस प्रकार व्रत रखने वालों की गणना उन कृपाणों में होता है जिनके संबंध में अल्लाह का कथन है:

إِنَّمَا يُوَفَّى ٱلصَّٰبِرُونَ أَجۡرَهُم بِغَيۡرِ حِسَابٖ. (الزمر:10)

अर्थात: "कृपाणों को पूर्ण रूप से अनगिनत सवाब दिया जाएगा."

(शैख़ मोहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह खेल एक मजालिसु-शहरी-रमज़ान नामक पुस्तक के नौवें अध्याय से संक्षेप एवं रद्द-व-बदल के साथ स्थानांतरित है.)

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआला ने उपवास करने वालों के लिए स्वर्ग में एक ऐसा द्वार तैयार कर रखा है जिससे उनके अतिरिक्त कोई और प्रवेश नहीं करेगा, सहल बिन सअ़द रज़ि अल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

"स्वर्ग का एक द्वार है जिसे रैय्यान कहते हैं, प्रलय के दिन इस द्वार से केवल उपवास करने वाले ही प्रवेश करेंगे, उनके अतिरिक्त और कोई उससे प्रवेश नहीं करेगा. पुकारा जाएगा कि उपवास करने वाले कहां हैं? वे खड़े हो जाएंगे उनके अतिरिक्त और कोई नहीं भीतर प्रवेश कर पाएगा और जब यह लोग भीतर प्रवेश कर जाएंगे तो यह द्वार बंद कर दिया जाएगा फिर उससे कोई अंदर प्रवेश नहीं कर सकेगा."

(इसे बुख़ारी:१८९६ एवं मुस्लिम: ११५२ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द बुख़ारी के हैं.)

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि वह नरक से सुरक्षा देने वाला ढाल है, उस्मान बिन अबुल-आस रज़ि अल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "उपवास नरक से सुरक्षा देने वाली ढाल है, जिस प्रकार तुम में से कोई युद्ध के मैदान में ढाल से अपनी सुरक्षा करता है."

(इसे इमाम अहमद: ४/२२ ने रेवा याद किया है एवं अल-मुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा है कि इसकी सनद मुस्लिम के शर्त पर सही है.)

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि इससे पाप क्षमा होते हैं, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान रज़ि अल्लाहू अन्हू कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: " मनुष्य को जो उत्पीड़न उसके गृह, संपत्ति एवं पड़ोस से होती है उसका निदान नमाज़, व्रत,

दान-पुण्य एवं भलाई का आदेश देने व दुष्टकर्मों से रोकने जैसी पुण्यों से हो जाती है."

(इसे बुख़ारी: ५२५, एवं मुस्लिम: १४४ ने रिवायत किया है.)

{मनुष्य को जो उत्पीड़न उसके गृह संपत्ति एवं पड़ोस में होती है.}

अर्थात: उनके अधिकारों को पूरा करने उनको संस्कृति एवं शिक्षा के आभूषण से सजाने के संदर्भ में आलस्य करने से जो पाप चढ़ते हैं उन पापों को उपवास जैसी उपासना मिटा देती है. इस कारणवश अल्लाह तआला उसके आलस्य को क्षमा कर देता है.

अम्र एवं न्ही का अर्थ है पुण्य का आदेश देना एवं पाप से रोकना.

● रमज़ान के महीनों के व्रत की एक विशेषता यह है कि मुसलमानों पर यह उपवास सरल कर दिए गए हैं, वह इस प्रकार की उपवास करने वाला जब इससे अवगत हो जाता है कि आसपास के संपूर्ण मनुष्य उपवास किए हुए हैं तो यह लगता है कि उसके लिए व्रत रखना आसान है और उसके भीतर उपासना की संदर्भ में चपलता उत्पन्न होती है.

● व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआला ने उपवास करने को प्रार्थना के स्वीकार करने का एक विशेष कारण घोषित किया है, इसका साक्ष्य नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का यह कथन है: "

तीन प्रकार की प्रार्थनाएं आवश्यक रूप से स्वीकार की जाती हैं: पिता की प्रार्थना, उपवास करने वालों की प्रार्थना, यात्री की प्रार्थना."

(इसे बैहक़ी: ३/३५४ ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया है, एवं अल-बानी ने अल-सहीहा:१७९७ में इसका उल्लेख किया है.)

इसके अतिरिक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: " अल्लाह ताला तीन प्रकार के मनुष्य की प्रार्थना वापस नहीं लौटाता: न्याय करने वाले शासक, उपवास करने वाले यहां तक की वह उपवास तोड़ लें, एवं उत्पीड़ित व्यक्ति."

(इसे अहमद:९७४३ आदि ने रिवायत किया है एवं अल-मुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा है कि यह हदीस अधिकतम मार्ग एवं गवाहों के आधार पर सहीह है.)

रमजान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान के महीने में रात्रि में जाग कर उपासना (तरावीह की नमाज़) करता है उसके पीछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का कथन है: " जिसने ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान के महीने में कयामुल-लेल की, अर्थात तरावीह की नमाज़ पढ़ी; उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं."

(इसे बुख़ारी: ३७ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है.)

इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का कथन है: " जो व्यक्ति ईमान के साथ क़्याम करे यहां तक कि वह समापन कर ले तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति के लिए पूरी रात्रि क़्याम करने का सवाब सुनिश्चित करेगा."

(इसे अबू दाऊद आदि ने अबूज़र रज़ि अल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है एवं शैख़ शुऐब रहिमहुल्लाह ने इसे सहीह कहा है.)

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान का व्रत रखता है उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो रमज़ान के व्रत ईमान की साथ सवाब की आशा करते हुए रखे उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाएंगे."

(इसे बुख़ारी: ६८ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है.)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मंच पर पधारे और तीन बार आमीन कहा! आपसे प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया: " जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए, और फ़रमाया: जिसने रमज़ान के महीने को पाया एवं उसकी क्षमा नहीं हो सकी और वह नरक में प्रवेश कर गया अल्लाह उसे

अपनी दया से वंचित कर दे! -आप आमीन कहिए- तो मैंने आमीन कहा."

(इसे अहमद: २/२४६-२५४, एवं इब्न-ए-ख़ुज़ैमा: ३/१२९ ने रिवायत किया है, इसका मूल सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या: २५५१ के अंतर्गत आई है, अल-बानी ने सहीह-उत्तरग़ीबि वत्तरहीब:९७७ में कहां है कि यह हदीस हसन सहीह है.)

अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं: रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे: " जब मनुष्य बड़े पापों से वंचित रहा हो ०५ नमाज़ें, एक जुमा द्वितीय जुमा तक, एक रमज़ान द्वितीय रमज़ान तक बीच के समय में होने वाले पापों को मिटाने का कारण है."

(इसे मुस्लिम: २३३ ने रिवायत किया है.)

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इस महीने में दान-पुण्य करना मुस्तहब है, इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहू अन्हूमा से मरवी है कि "नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम भलाई करने में सर्वश्रेष्ठ उदार थे और रमजान में आपकी उदारता की तो कोई सीमा ही नहीं थी."

(इसे बुख़ारी:०६ एवं मुस्लिम:२३०८ ने रिवायत किया है.)

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इसके उमरे का लाभ कई गुना बढ़ा दिया जाता है. इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहू अन्हूमा फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अंसारी महिला से

कहा: "जब रमज़ान आए तो उसमें उमरा कर लो, क्योंकि (रमज़ान के महीने में एक उमरा ह़ज्ज के समान होता है."

(इसे बुख़ारी: १७८२ एवं मुस्लिम: १२५६ ने रिवायत किया है.)

● रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि रमजान की प्रत्येक रात्रि में अल्लाह ताला अपने कुछ दासों को नरक से स्वतंत्रता का प्रमाण देता है, अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं के रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का कथन है: " जब मैं रमज़ान की प्रथम रात्रि आती है तो दुष्टदेवों एवं विद्रोह जिनों को जकड़ दिया जाता है, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, उनमें से कोई भी द्वार खोला नहीं जाता. एवं स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं, उनमें से कोई भी द्वार बंद नहीं किया जाता. पुकारने वाला पुकारता है: भलाई के चाहने वाले! आगे बढ़, एवं पापों के चाहने वाले! रुक जा. और अग्नि से अल्लाह के बहुत से स्वतंत्र किए गए दास हैं. (हो सकता है तू भी उन्हीं में से हो!) और ऐसा रमज़ान की प्रत्येक रात्रि को होता है."

(इसे तिर्मीज़ी:६८२, एवं इब्न-ए-माजा: १६४२ ने रिवायत किया है, एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीह-हुल-जामे: ७५९ में इसे हसन कहा है.)

जाबिर रज़ि अल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला प्रत्येक उपवास के तोड़ते समय

कुछ लोगों को नरक से स्वतंत्र करता है, और यह (रमज़ान की) प्रत्येक रात्रि को होता है."

(इसे अहमद:२२२०२, एवं इब्ने माजा:१६४३ ने रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए गए शब्द इब्न-ए-माजा के हैं, इसके अतिरिक्त शैख़ अल-बानी ने सहीह इब्न-ए-माजा में इसे सहीह कहा है.)

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इस महीने में स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते, हैं नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्टदेवों को हथकड़ियों से जकड़ दिया जाता है. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हो से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जब रमज़ान के महीने का आगमन होता है तो स्वर्ग के संपूर्ण द्वार खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्टदेवों को ज़ंजीरों से जकड़ दिया जाता है."

(इसे बुख़ारी:१८९९, एवं मुस्लिम: १०७९ ने रिवायत किया है.)

● रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रचुरता के साथ क़ुरआन का सस्वर पाठ करना मुस्तहब है, सलफ़-ए-सालेहीन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की आदत थी कि वे नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के मार्ग का पालन करते हुए रमज़ान में पूरा क़ुरआन का सस्वर पाठ पूरी व्यवस्था के साथ किया करते थे, क्योंकि जिब्रील अलैहिस्सलाम प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ क़ुरआन सुनते-सुनाते थे.

● **हम अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि हमें रमज़ान के व्रत उसी प्रकार रखने की क्षमता प्रदान करें जिस प्रकार उसकी इच्छा है इसके अतिरिक्त अपनी याद, आभार व्यक्त करने एवं सुंदर उपासना में हमें सहयोग करे!**

अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है!

द्वितीय उपदेश!

الحمد لله و كفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد !

● **रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि इसी में क़ुरआन का अवतार हुआ, अल्लाह का कथन है:**

شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ. (البقرة:185)

अर्थात: "रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरआन को अवतरित किया गया."

रमज़ान में भी शुभ रात्रि में क़ुरआन अवतरित हुआ, अल्लाह का कथन है:

إِنَّآ أَنزَلۡنَـٰهُ فِى لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ. (القدر:01)

अर्थात: " हमने इसे शुभ रात्रि में अवतरित किया."

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इसमें शुभ रात्रि होती है, जो कि एक सर्वश्रेष्ठ रात्रि है. इसमें क़ुरआन लोह-ए-महफ़ूज़ से बैतूल इज़्ज़त की ओर अवतरित किया गया जो सांसारिक आकाश में है, इसके पश्चात परिस्थितियों के अनुसार थोड़ा-थोड़ा अवतरित होता रहा.

इसे शुभरात्रि इसलिए कहा जाता है कि वह बहुत ही सर्वश्रेष्ठ स्थान वाली रात्रि है जैसा कि कहा जाता है: (अमुक व्यक्ति बड़ा उच्च स्थान वाला है.) इसी प्रकार शुभ की ओर रात्रि का संबंध किसी वस्तु को उसकी गुणवत्ता की ओर संबंधित करने जैसा है इसलिए इसका अर्थ यह होगा कि सर्वश्रेष्ठ, उच्च स्थान वाली रात्रि.

एक कथन के अनुसार इसे शिव की रात्रि इस कारण वश कहा जाता है कि इसमें पूर्ण वर्ष का न्याय किया जाता है, जैसा कि अल्लाह का कथन है:

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ. (الدخان: 04)

अर्थात: " इसी रात्रि में प्रत्येक शक्तिशाली कार्यों का न्याय किया जाता है."

इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह कहते हैं: " यही कथन सत्य है."

{(१) शिफ़ा-उल-अलील: १/१४०, प्रकाशित: मकतबतुल-बीकान, रियाज़, (२) इन कथाओं के देखने हेतु देखें: अहादीसुस्-सियाम:१४०, लेखक शैख़ अब्दुल्लाह फ़ौज़ान.}

● **अल्लाह तआला ने शुभ रात्रि को लाभदायक रात्रि से वर्णित किया है, जैसा कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन के अवतरित होने के संदर्भ में कहा:**

إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةٖ مُّبَٰرَكَةٍۚ (الدخان:03)

अर्थात: "हमने इसको लाभदायक रात्रि में अवतरित किया."

● **शुभ रात्रि की एक विशेषता यह है कि इसमें देवदूतों का अवतार होता है, जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है:**

تَنَزَّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا (القدر:04)

अर्थात: " इसमें रूहुल-अमीन एवं देवदूत अवतरित होते हैं."

इस श्लोक में अल-रूह़ का अर्थ जिब्रील है, इब्न-ए-कसीर रहिमहुल्लाह इस श्लोक का उल्लेख करते हुए लिखते हैं: अर्थात: इस रात्रि प्रचुरता के साथ बरकत का अवतार होता है, इस कारणवश देवदूत भी भारी संख्या में अवतरित होते हैं, बरकत एवं रहमत के साथ देवदूतों का भी अवतार होता है. इसके अतिरिक्त यह देवदूत क़ुरआन के सस्वर पाठ करते समय भी अवतरित होते हैं एकदमिक परिषदों को अपने अंतर्गत ले लेते हैं, सत्यता के साथ शिक्षा प्राप्त करने वाले के सम्मान में उनके लिए अपने परों को बिछा देते हैं."

इब्न-ए-कसीर रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ.

● **शुभ रात्रि की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति पूर्ण रात्रि नमाज़ पढ़ते हुए व्यतीत करे, अल्लाह ने इस रात्रि उपासना करने वालों के लिए जो लाभ एवं सवाब तैयार कर रखा है (उस पर विश्वास करते हुए) एवं**

लाभ-सवाब की आशा करते हुए; उसके पूर्व में किए गए संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाते हैं. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हो से मर भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: " जो व्यक्ति रमज़ान के व्रत; विश्वास एवं लाभ-सवाब की आशा करते हुए रखे उसके पूर्व में किए गए संपूर्ण पाप क्षमा हो जाते हैं.

इसे बुख़ारी:१९०१, एवं मुस्लिम:७५९ ने रिवायत किया है.)

● शुभ रात्रि की एक विशेषता यह है कि इस रात्रि को नमाज़, उपासना में व्यतीत करना हज़ार महीनों की उपासना की तुलना में अधिक लाभदायक है, अर्थात 83 वर्षों से भी अधिक अल्लाह का कथन है:

لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ. (القدر:03)

अर्थात: "शुभ रात्रि १००० महीनों से अधिक अच्छी है."

इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: रमज़ान का लाभदायक महीना तुम्हारे निकट आ चुका है, अल्लाह ने तुम पर इसके व्रत अनिवार्य कर दिए हैं, इसमें आकाश के द्वार खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, विद्रोही दुष्टदेवों को हथकड़ियां पहना दी जाती हैं एवं इसमें अल्लाह तआला के लिए एक रात्रि ऐसी है जो हज़ार महीनों से अधिक अच्छी है.जो इसके लाभ से वंचित रहा वह बस वंचित ही रहा."

(इसे नसई: १९०१ ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है, एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सहीह कहा है.)

● रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि इस के अंतिम चरण में एतेकाफ़ करना मुस्तहब है, एतेकाफ़ का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञाकारीता एवं उपासना के हेतु मस्जिद से चिपक जाया जाए. आयशा रज़ि अल्लाहू अन्हा रिवायत करती हैं: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मृत्यु तक लगातार रमज़ान के अंतिम चरण में एतेकाफ़ करते रहे एवं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मृत्यु के पश्चात उनकी पवित्र पत्नियां एतेकाफ़ करती रहीं." (बुख़ारी:२०२६, एवं मुस्लिम:११७२)

एतेकाफ़ करने का कारण यह था कि आप शुभ रात्रि की खोज करते, अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहू अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " मैंने इस शुभ रात्रि की खोज करने हेतु प्रथम चरण का एतेकाफ़ किया, फिर मैंने बीच के चरण एतेकाफ़ किया, फिर मेरे पास जिब्रील का आगमन हुआ तो मुझसे कहा गया: वह अंतिम १० रात्रि में है अब तुम में से जो एतेकाफ़ करना चाहे वह एतेकाफ़ कर ले." (मुस्लिम:११६७)

● रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह है कि अल्लाह ताला ने इसके अंत में ज़कात-उल-फ़ित्र के निकालने का आदेश दिया है जो व्रत के बीच पाए गए पापों एवं नकारात्मक बातों से उपवास करने वाले को पवित्र करती है, इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं: "रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फ़ित्र के दान-पुण्य को उपवास करने वालों को पाप एवं नकारात्मक बातों से पवित्र करने एवं लाचार व्यक्तियों (मिसकीन) के खाने हेतु अनिवार्य किया है."

इसे अबू दाऊद:१६०९ ने रिवायत किया है, एवं अल-सुनन के अनुसंधान में अरनाउत ने इसे हसन कहा है.)

● यह रमज़ान के महीने की २० विशेषताएं हैं मुसलमानों को चाहिए कि वे इन से अवगत हों, एवं व्रत के दौरान इन्हें अपनी बुद्धि में सुरक्षित रखें ताकि ईमान एवं लाभ की आशा के साथ व्रत पूरा करने में यह विशेषताएं सहायक स्वरूप हों.

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह तआला आप पर दया करे- कि अल्लाह ने आपको एक विशाल आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓـِٔكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.
(الأحزاب:56)

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो."

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं रसूल पर रहमत व सलामती भेज, तू उनके पश्चात आने वाले महान शासकों (ख़ुलफ़ा), समर्थकों एवं प्रलय तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारिता करने वालों से प्रसन्न हो जा. हे अल्लाह इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं समृद्धि प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादीयों को अपमानित कर दे, तू अपने इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट कर दे एवं अपने एकेश्वरवाद की सहायता कर! हे अल्लाह! हमें अपने देशों में शांति वाला जीवन प्रदान कर,

हमारे धर्म गुरुओं एवं शासकों को सुधार दे उन्हें दिशा निर्देश का पालन करने वाला बना हे अल्लाह संपूर्ण मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं धर्म की समृद्धि की शक्ति प्रदान कर उन्हें उनके प्रजा के हेतु दयालु एवं कृपालु बना!!!

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

०४ रमज़ान १४४२ हिजरी

जूबैल, **सऊदी** अ़रब

०९६६५०५९६६६१

अनुवादः

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com